UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

महाकाव्य में वर्णित व्यापार व्यवस्था –एक अध्ययन

सुरेन्द्र सिंह
पी०एच०डी शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
E-mail:surenderchouhan04@gmail.com

सारांश

महाकाव्य से भी भारत और दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों के सम्बन्धों के विषय में पता चलता है। इनमें सर्वप्रथम रामायण का प्रसंग अत्यन्त रोचक है। जब सीता का अपहरण लंका के राजा रावण द्वारा कर लिया जाता है तब रामचन्द्र सीता की खोज में वनों में भटकते हुए सुग्रीव से मिलते हैं। सुगीव राम से कहता है कि मैं आपकी सहायता करूँगा लेकिन आप मेरे बड़े भाई बालि से मुझे छुटकारा दिलाइये। इस पर राम बालि का वध कर सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बना देते है। राजा होने पर सुग्रीव भोग–विलास में डूब जाता है व राम को सहायतार्थ दिया हुआ वचन भूल जाता है। ऐसी स्थिति में लक्ष्मण अत्यन्त क्रोधित हो सुग्रीव के पास पहुँचते हैं लेकिन सुग्रीव लक्ष्मण से क्षमा याचना करके, सहायता का आश्वासन देकर राम के पास पहुँचते हैं।

मूलशब्द– महाभारत, रामायण, व्यापार, दक्षिण–पूर्वी एशिया।

प्रस्तावना

राम के पास पहुँचकर सुग्रीव अपनी सेना को सीता की खोज में लगाते हैं। सुग्रीव अपने सैनिकों को सम्बोधित करके कहते हैं कि, ''जिन द्वीपों में पर्वतों पर होकर जाना पड़ता है, जहाँ समुद्र को तैरकर या नाव आदि के द्वारा पहुँचा जाता है, उन सब स्थानों में सीता को ढूँढना''[1] सुग्रीव आगे कहते हैं कि, ''तुम लोग यत्नशील होकर सात राज्यों से सुशोभित यवद्वीप (जावा) सुवर्णद्वीप (सुमात्रा) तथा रूप्यकद्वीप में भी जो सुवर्ण की खानो से सुशोभित हैं, में ढूँढने का प्रयत्न करो।''[2] यवद्वीप (जावा) के आगे के प्रदेश के बारे में सुग्रीव सैनिकों का मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं कि, यवद्वीप (जावा) को लाँघकर आगे जाने पर एक शिविर नामक पर्वत मिलता है, जिसके ऊपर देवता व दानव निवास करते हैं, यह पर्वत अपने उच्च शिखर से स्वर्ग लोक का स्पर्श करता सा जान पडता है।[3] इसके पश्चात सुग्रीव भारत के दक्षिण में स्थित लंका को दीप्तिशाली द्वीप बताते हुए कहते हैं कि उस समुद्र (हिन्द महासागर) के पार एक द्वीप है जिसका विस्तार सौ योजन है वहाँ मनुष्यों की पहुँच नहीं है। वह जो दीप्तिशाली द्वीप है उसमें जाओ और सीता की खोज करो।[4] श्रीलंका को दीप्तिशाली द्वीप इसलिए कहा गया हैं क्योकि इस काल में भी संभवतः भारत के लोगो को श्रीलंका में पाये जाने वाले रत्नों, मणियों इत्यादि के विषय में जानकारी थी।

महाकाव्यों में वर्णित व्यापार

रामायण के किष्किन्धाकाण्ड के इस वृतांत से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल में दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों की जानकारी भारतीयों को थी। वे इन देशों में आया–जाया करते थे। संभवतः व्यापार भी करते थे क्योकि यहाँ दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों को सुवर्ण की खानों से सुशोभित बताया गया है।

महाभारत के दिग्विजय पर्व में भीम की पूर्व दिशा की विजय तथा सहदेव की दक्षिण दिशा की विजय के वृतांत से यह स्पष्ट हो जाता है कि किस–किस नगर से होकर दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों में जाया जाता था और वहाँ से कौन–कौन सी बहुमूल्य वस्तुएँ भारत आती थी। भीम की पूर्व दिशा की विजय का उल्लेख महाभारत में इस प्रकार मिलता है–शत्रुओं का शोक बढ़ाने वाले भरत वंशशिरोमणि महाप्रतापी एवं पराक्रमी भीमसेन, धर्मराज की आज्ञा ले शत्रु के राज्य को कुचल देने वाली और हाथी, घोड़े एवं रथ से भरी हुई, कवच आदि से सुसज्जित विशाल सेना के साथ पूर्व दिशा को जीतने के लिए चले।[5] नरश्रेष्ठ भीमसेन सबसे पहले पांचालों की महानगरी

अहिच्छत्र पहुँचे और वहाँ उन्होनें पाँचाल वीरों को पराजित किया।[6] वहाँ से आगे जाकर भीम ने गण्डक (गण्ड की नदी के तटवर्ती) और विदेह (मिथिला) व दशार्ण नरेश सुधर्मा को भी पराजित किया।[7] सुधर्मा के पराकर्म से प्रभावित होकर भीम ने उसे अपना सेनापति बनाया और पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान किया।[8] इसके बाद भीम ने अश्वमेघ देश के राजा रोचमान को उनके सेवकों सहित बलपूर्वक जीत लिया।[9] पूर्व में विजय प्राप्त करके दक्षिण में आकर भीम ने पुलिंदों के राजा सुकुमार और वहाँ के राजा सुमित्र को अपने अधीन कर लिया।[10] तत्पश्चात् भीम धर्मराज की आज्ञा प्राप्त कर शिशुपाल शासक के यहाँ गये।[11] चेदिराज शिशुपाल ने भीम का स्वागत सत्कार किया।[12] चेदि राज्य में पहुँचकर शिशुपाल व भीम ने एक–दूसरे के कुलों के बारे में कुशलक्षेम पूछी।[13] शिशुपाल ने भीम की अधीनता स्वीकार कर, कर देने का वचन दिया।[14] चेदि राज्य में तेरह दिन ठहरने के बाद भीम आगे बढ़े।[15] अपने विजय अभियान को आगे बढ़ाते हुए भीम ने कुमारदेश के राजा श्रेणिमान तथा कौसलराज बृहद्धल को परास्त किया।[16] इसके बाद भीम ने अयोध्या के धर्मज्ञ नरेश महाबली दीर्घयज्ञ को वश में कर लिया।[17] तत्पश्चात् पाण्डुकुमार ने गोपालकक्ष और उत्तर कौसल देश को जीतकर मल्लराष्ट्र के अधिपति पार्थिव को अपने अधीन कर लिया।[18] इसके बाद हिमालय के पास स्थित जलोद्रव देश पर भीम ने थोड़े ही समय में अधिकार कर लिया।[19] इस प्रकार भीम आगे बढ़े और उन्होनें मल्लाट के समीपवर्ती देशों तथा शुक्तिमान् पर्वत पर भी विजय प्राप्त की।[20] भीम ने आगे बढ़ते हुए युद्ध में पीठ न दिखाने वाले काशिराज सुबाहु को बलपूर्वक हराया।[21] अपने विजय अभियान को आगे बढ़ाते हुए भीम ने सुपार्श्व के निकट राजराजेश्वर क्रथको जो युद्ध में बलपूर्वक उनका सामना कर रहे थे, हरा दिया।[22] तत्पश्चात् महातेजस्वी कुन्तीकुमार ने मत्स्य, महाबली मलद, अनघ और अभय नामक देशों को जीतकर पशुभूमि (पशुपतिनाथ के निकटवर्ती स्थान नेपाल) को भी सब ओर से जीत लिया। वहाँ से लौटकर महाबाहु भीम ने मदधार पर्वत और सोमथेयनिवासियों को परास्त किया। इसके बाद बलवान भीम ने उत्तराभिमुख यात्रा की और वत्सभूमि पर बलपूर्वक अधिकार जमा लिया।[23] इसके बाद भीम ने क्रमशः भर्गों के स्वामी, निषादों के अधिपति तथा मणिमान् आदि बहुत से भूपालों को अपने अधिकार में करते हुए मल्लदेश तथा भोगवान् पर्वत को थोड़े की प्रयास में जीत लिया।[24] शर्मक और वर्मको को उन्होनें समझा–बुझाकर ही जीत लिया विदेह देश के राजा जनक को पुरूषसिंह भीम ने अधिक उग्र प्रयास किये बिना ही परास्त किया। फिर शकों और बर्वरों पर छल से विजय प्राप्त कर ली।[25] विदेह देश में रहते हुए कुन्तीकुमार भीम ने इन्द्रपर्वत के निकटवर्ती सात किरात राजाओं को परास्त कर दिया व मगध की ओर बढ़े।[26] मगध जाते हुए मार्ग में दण्ड–दण्डधार तथा अन्य राजाओं को साथ लेकर वे गिरिव्रज में आये।[27] वहाँ जरासंध कुमार सहदेव को कर देने की शर्त पर राज्य पर प्रतिष्ठित की भीम ने कर्ण पर चढ़ाई की। कर्ण को परास्त करते हुए बलवान भीम पर्वतीय राजाओं पर विजय प्राप्त करते हुए मोदागिरि के राजा को युद्ध भूमि में मार कर आगे बढ़े।[28] इसके पश्चात भीम पुण्ड्रक देश के अधिपति महाबली वीर राजा वासुदेव जो कोशी नदी के कछार में रहते थे को युद्ध में परास्त किया तथा वंगदेश की ओर आगे बढ़े।[29] इस प्रकार विजय प्राप्त करते हुए भीम दक्षिण–पूर्वी एशिया को जाने वाले मार्ग पर अग्रसर हुए और उन्होनें समुद्रसेन, भूपाल, चन्द्रसेन, ताम्रलिप्ति के राजा, कर्वटाधिपति तथा सुह्य नरेश को जीता व समुद्र तट पर निवास करने वाले म्लेच्छों को अपने अधीन कर लिया।[30] इस प्रकार भीम बहुत से देशों पर अधिकार करने के पश्चात दक्षिण–पूर्वी एशिया के मार्ग पर अग्रसर होते हुए लौहित्य देश (ब्रह्मपुत्र नदी के पार) पहुँचे।[31] दक्षिण–पूर्वी एशिया के समस्त टापुओं, द्वीपों व देशों में शासन करने वाले राजाओं को भी भीम ने परास्त किया और उनसे भाँति–भाँति के रत्न प्राप्त किये।[32] दक्षिण–पूर्वी एशिया के राजाओं ने भीम को चन्दन अगर, वस्त्र, मणि, मोती, कम्बल, सोना, चाँदी और बहुमूल्य मूँगे भेंट किये। इस प्रकार भीम को यहाँ से करोड़ों की संख्या में धन–रत्न प्राप्त हुए।[33] तदन्तर भीम ने इन्द्रप्रस्थ में आकर सारा धन धर्मराज को सौंप दिया।[34]

इस प्रकार भीम की पूर्व दिशा की सम्पूर्ण विजयों को प्रस्तुत करने का तात्पर्य यह है कि इन विजयों के क्रमबद्ध अध्ययन से ही यह स्पष्ट होता है कि भारत में पूर्व दिशा में कौन–कौन से राज्य थे जिन्हें पार करने के

UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

पश्चात दक्षिण–पूर्वी एशिया जाया जाता था। भीम विजय प्राप्त करते हुए ताम्रलिप्ति पहुँचते है और वहाँ से ब्रह्मपुत्र के पार के प्रदेशों से होते हुए समुद्र मार्ग द्वारा दक्षिण–पूर्वी एशिया के द्वीपों तक पहुँचते हैं। ताम्रलिप्ति इस काल में भी दक्षिण–पूर्वी एशिया को जाने वाले यात्रियों, राजाओं व व्यापारियों के लिए प्रमुख बन्दरगाह था। भीम ने दक्षिण–पूर्वी एशिया के राजाओं से भेट में जो वस्तुएँ प्राप्त की उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ये वस्तुएँ इन देशों में महत्वपूर्ण थी तथा भारत में इनका आयात होता था।

सभापर्व के अन्तर्गत दिग्विजय पर्व में ही सहदेव की दक्षिण दिशा की विजय मे उसके सागर द्वीप (सुमात्रा) तथा लंका आदि देशों को जीतने का पता चलता है। सहदेव ने अपनी विजय की शुरूआत शुरसेन व मत्स्य राज्यों को जीतकर की।[35] इसके पश्चात उसने महाबली दन्तवक्र को परास्त किया। इससे कर देने का वचन लेकर सहदेव आगे बढ़े।[36] इसके बाद राजा सुकुमार तथा सुमित्र को वश में किया मत्स्यों तथा लुटेरों पर विजय प्राप्त की।[37] सहदेव ने नरराष्ट्र को जीतकर राजा कुन्तिभोजपर आक्रमण किया।[38] मार्ग में जम्भक पुत्र को परास्त करने के बाद सहदेव दक्षिण दिशा में बढ़ गये।[39] माद्रीकुमार सेक और अपरसेक देशों पर विजय प्राप्त कर व उनसे रत्न इत्यादि की भेट लेकर नर्मदा नदी की ओर बढ़े।[40] सहदेव ने अवन्ति के राजकुमारों को परास्त किया व उनसे रत्न इत्यादि की भेट ली और भोजकट नगर पहुँचे।[41] इसके बाद सहदेव ने कौसलाधिपति, वेणानदी के तटवर्ती प्रदेशों के स्वामी, कान्तारक तथा पूर्वकौसल के राजाओं को युद्ध में परास्त किया।[42] इसके पश्चात कई छोटे–छोटे राजाओं को परास्त करने के बाद लोकविख्यात किष्किन्धा नामक गुफा में जा पहुँचे।[43] गुफा में वानर राज मैन्द और द्विविद के साथ युद्ध करके उनसे रत्नों की भेंट लेकर महिष्मति पहुँचे और वहाँ के राजा नील के साथ युद्ध किया।[44] राजा नील की रक्षा के लिए स्वंय अग्निदेव उपस्थित थे इसलिए सहदेव को नील को जीतने में कठिनाई हुई। अतंतः अग्निदेव के हस्तक्षेप के कारण राजा नील ने सहदेव को कर देना स्वीकार कर लिया। त्रिपुरी के राजा अमितौजा के वश में करके सहदेव सौराष्ट्र की ओर बढ़े।[45] सौराष्ट्र में सहदेव ने भोजकट निवासी रूक्मी तथा विशाल राज्य के अधिपति भीष्म को अपने अधीन किया व रत्नों की भेंट लेकर आगे बढ़े।[46] इसके पश्चात माद्री कुमार शूर्पारक बन्दरगाह पहुँचे और वहाँ से समुद्र मार्ग द्वारा सागरद्वीप (सुमात्रा) में निवास करने वाले म्लेच्छ–जातीय राजाओं, निषादों तथा राक्षसों, कर्णप्रावरणको[47] को भी परास्त किया।[48] इन विजयों के पश्चात सहदेव ने दक्षिण भारत में पाण्ड्रय, द्रविड़, उण्ड्र, केरल, आन्ध्र, तालवन, कलिंग, उष्टकर्णिक, रमणीय अटवीपुरी तथा यवनों के नगरों को अपने अधीन किया।[49] तत्पश्चात् उसने अपने भतीजे घटोत्कच का तुरन्त चिंतन किया व उसे आज्ञा दी कि वह श्रीलंका जाए तथा वहाँ के राजा विभीषण से राजसूय यज्ञ के लिए भाँति–भाँति के बहुत से रत्न प्राप्त करे। उस समय लंकापुरी (श्रीलंका) स्वर्ग के समान सुन्दर थी।[50] लंकापुरी इतनी समृद्ध थी कि वहाँ के गवाक्ष (खिड़की) सोने की बनी थी और उनके अन्दर मोतियों की जाली लगी हुई थी। यहाँ पर सुवर्ण और रत्नों की इतनी अधिकता थी कि नगर की प्रत्येक वस्तु सुवर्ण की बनी थी। श्रीलंका की सड़कों को रत्नों से पूरित बताया जाता है। यह स्थान इतना सुन्दर था कि इन्द्र की नगरी अमरावती भी इसके सम्मुख कुछ नहीं थी।[51] घटोत्कच ने सहदेव की विजय तथा उसे वहाँ भेजने का प्रयोजन लंका नरेश विभीषण को कह सुनाया। अब महाभारत में उन वस्तुओं का उल्लेख मिलता है जो घटोत्कच को श्रीलंका से प्राप्त हुई। इनमें हाथी दाँत व कई प्रकार के रत्न सम्मिलित थे। तत्पश्चात घटोत्कच सहदेव के पास लौट गया और सहदेव उन भेंट की हुई अमूल्य वस्तुओं के साथ इन्द्रप्रस्थ वापस चला गया।

इस प्रकार सहदेव की दक्षिण विजय के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भीम के ही समान सहदेव ने भी श्रीलंका से सुवर्ण व रत्न प्राप्त किये। सहदेव की दक्षिण विजय का जो मार्ग है उससे अनेक देशी–विदेशी बन्दरगाहों का पता चलता है। वह इन्द्रप्रस्थ से चलकर मथुरा–मालवा पथ से महिष्मति होकर, पोतनपुर–पैठन पहुँचा। यहाँ से वह शूर्पापरक और समुद्र मार्ग से सागरद्वीप (सुमात्रा) पहुँचा। दक्षिणापथ और पूर्व दिशा की यात्रा से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल में भी दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों को भारत का भाग माना जाता था।

UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

इसलिए भारत के शासक दिग्विजय के लिए दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों में जाते थे। इन द्वीपों से प्राप्त वस्तुओं से यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि इन द्वीपों से कौन–कौन सी वस्तुएँ भारत आती थी।

पाणिनि के विवरण से भी यह पता चलता है कि दक्षिण–पूर्वी एशिया के द्वीपों में जाने के लिए व्यापारी कौन–कौन से मार्ग से जाते थे। इस काल के बाद के यात्रा विवरणों में दक्षिण–पूर्वी एशिया के एक द्वीप से दूसरे द्वीप में जाने के लिए इन्हीं मार्गों का प्रयोग किया गया है। पाणिनि के एक सूत्र ''उत्तरयाथेनाहृतम्'' की व्याख्या करते हुए पंतजलि कात्यायन का एक वार्स्तिक ''अजपथशंकुपथाभ्यांच'' देते हैं। यहाँ उस अजपथ व शंकुपथ की और संकेत किया गया है जिसका प्रयोग दक्षिण–पूर्वी एशिया जाते हुए मौर्योत्तर काल में चारूदत्त ने किया था। अजपथ अर्थात वह जिस पर केवल बकरे चले, देवपथ, हंसपथ, स्थलपथ, करिपथ व राजपथ जैसे मार्गों का भी उल्लेख मिलता है।

आयात–निर्यात

उपर्युक्त कथानकों से यह स्पष्ट हो जाता है कि दक्षिण–पूर्वी एशिया जाने वाले व्यापारी सुवर्ण के आकर्षण में वहाँ जाते थे। दक्षिण–पूर्वी एशिया से भारत आने वाली वस्तुओं में सोने का प्रमुख स्थान था क्योंकि ईरावदी और सालवीन नदियों की रेत से सोना निकाला जाता था और मलाया में भी सोने की खाने है। दक्षिण–पूर्वी एशिया से भारत में सोना आयात किये जाने की पुष्टि उपर्युक्त कथानकों से हो जाती है। महाभारत[52] में सोने को दक्षिण–पूर्वी एशिया से भारत आने वाली वस्तुओं में प्रमुख वस्तु बताया गया है। सुप्पारक जातक से पता चलता है कि दक्षिण–पूर्वी एशिया से सोना भारत में लाया जाता था। मोतीचन्द्र[53] ने भी भारत में इन देशों से सोना आयात किये जाने की पुष्टि की है। सोने के बर्तन, मुकुट, कुण्ड़ल, सोने के हार, सोने के बने पुष्प भी भारत आते थे।

सोने के साथ–साथ चाँदी का भी आयात होता था क्योंकि सुवर्णभूमि की रेत की समुद्दवणिज जातक में चाँदी के समान बताया गया है। सुप्पारक जातक से भी दक्षिण–पूर्वी एशिया से चाँदी के आयात की पुष्टि होती है। सोने के समान चाँदी के बर्तन भी भारत में आते थे।

सोने–चाँदी के अतिरिक्त आयात की वस्तुओं में रत्नों का प्रमुख स्थान था। इन रत्नों में नीलम, ज्योतिरस (जेस्पर), सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, मानिक, बिल्लौर, हीरे और यशब प्रमुख थे।[54] हाथीदाँत भी आयात की प्रमुख वस्तु थी। महाभारत[55] से पता चलता है कि सिंहल से सुवर्ण व रत्न जड़ित वस्तुएँ, सुन्दर, मूँगे, भाँति–भाँति के मणिरत्न, सुवर्ण व मणि और मोती से जड़ित शस्त्र, चंद्रमा के समान उज्जवल एवं विचित्र शतावर्त शंख भारत में आयात किये जाते थे। सुप्पारक जातक में भी हीरे, नील–मणि व मूँगे भारत लाये जाने का पता चलता है। मोतीचन्द्र के अनुसार यशब बर्मा से आता था।[56]

दक्षिण–पूर्वी एशिया से सुगन्धित पदार्थ व मसाले भी भारत आते थे। महाभारत[57] से पता चलता है कि भारत में चंदन व अगर बर्मा से आते थे। तिब्बत बर्मी किरात लोग सीमान्त प्रदेश से अगर, चंदन, कालीयक तथा दूसरे सुगन्धित द्रव्य भारत आते थे।[58]

बौद्ध कालीन ग्रन्थों विशेषतः जातक कथाओं से आयात और निर्यात की वस्तुओं का पता नहीं चलता। आयात की जाने वाली वस्तुओं के बारे में महाकाव्यों से पता चल जाता है। किन्तु निर्यात के बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। इस काल के अर्न्तदेशीय व्यापार में सूती कपड़े का विशेष स्थान था। सूती कपड़े के लिए बनारस[59] एक प्रसिद्ध जगह थी। बनारस के व्यापारी इसी कपड़े का व्यापार करते थे। जातकों में गांधार के लाल कम्बलों[60] की तारीफ की गई है। उड्डीयान[61] तथा शिवि[62] के शाल बड़े वेशकीमती होते थे। पठानकोट के इलाके में कोटुम्बर[63] नाम का एक तरह का ऊनी कपड़ा बनता था। उत्तरी भारत ऊनी कपड़ो के लिए प्रसिद्ध था। भारत से वस्त्रों का निर्यात सम्भवतः दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों को किया जाता रहा होगा

निष्कर्ष

UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस काल में भारत के दक्षिण–पूर्वी एशिया के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की शुरूआत हुई। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इस काल में व्यापारियों को दक्षिण–पूर्वी एशिया के साथ व्यापार के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी थी। जातकों में व्यापारियों के दक्षिण–पूर्वी एशिया जाने के कई वृत्तांत मिलते है। महाजनक जातक में महाजनक धन कमाने हेतू सुवर्णभूमि गया था। सुप्पारक जातक, समुद्दवणिज, पंड़र जातक, शंख जातक, सुसन्धि जातक इन सभी में व्यापारियों के दक्षिण–पूर्वी एशिया जाने का उल्लेख मिलता है। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि इन व्यापारियों के दक्षिण–पूर्वी एशिया जाने का एकमात्र उद्देश्य धन कमाना था। व्यापारी इन देशों में साधारण वस्तुएँ लेकर जाते थे और वहाँ से इनके बदले में बहुमूल्य वस्तुएँ लेकर वापस लौटते थे। कई व्यापारी तो दक्षिण–पूर्वी एशिया गये और वही बस गये। व्यापारियों में इतना साहस तो तब था जबकि दक्षिण–पूर्वी एशिया जाने के निए मार्ग कठिनाईयों से भरा हुआ था। समुद्रयात्रा में अनेक कठिनाइयाँ और भय थे। समुद्रयात्रा से लौटाने वाले भाग्यवान समझे जाते थे। यात्रियों व व्यापारियों की पत्नी और माता उन्हें समुद्रयात्रा से रोकने का प्रयत्न करती थीं, किन्तु भारतीय कोमल और भावुक नहीं थे। जातकों में एक जगह उल्लेख है कि बनारस के एक धनी व्यापारी ने जब एक जहाज खरीदकर समुद्रयात्रा की ठानी तब उसकी माता ने बहुत मना किया परन्तु उसे वह रोती–बिलखती हुई छोड़कर चला गया। इस काल में सुवर्णभूमि की यात्रा पर जाने वाले व्यापारियों के जहाज टूट जाते थे। लकड़ी के जहाज भँवर (वोहर) में डूब जाते थे। टूटे हुए जहाजों से यात्री बहते हुए कभी–कभी भयंकर स्थानों मे आ लगते थे। बलाहकस्स जातक में यात्रियों के जहाज टूटने का विस्तृत वर्णन है। इस जातक के अनुसार यात्रियों का जहाज सिंहल के पास समुद्र में टूट गया। जहाज के टूटने पर यात्री किनारे लगे। यह खबर यक्षिणियों को लगी और वे उन व्यापारियों को मारकर खा गई। इन सब कठिनाईयों का सामान करते हुए भी व्यापारी दक्षिण–पूर्वी एशिया गये। रामायण में भी सुग्रीव दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों का उल्लेख करता है। इस काल में दक्षिण–पूर्वी एशिया के द्वीपों को भारत का ही भाग समझा जाता था। महाभारत के दिग्विजय पर्व में भीम और सहदेव की दिग्विजियों में सागरद्वीप (सुमात्रा), जावा, श्रीलंका से प्राप्त वस्तुओं का उल्लेख मिलता है। यद्यपि यह प्रारम्भिक काल था जब व्यापारिक गतिविधियाँ दक्षिण–पूर्वी एशिया तक बढ़ी किन्तु यह प्रारम्भिक काल में भी विकसित अवस्था में थी।

सन्दर्भ सूची

1. *बाल्मीकि रामायण,* 1/40/29, ''गिरिभिर्ये च गम्यन्ते प्लवेन च।''
2. *वही,* 1/40/30, ''यत्रवन्तो यवद्वीपं सप्तराजोपशोभितम्।
   सुवर्णरूप्यकद्वीप सुवर्णाकरमण्ड़ितम्।''
3. *वही,* 1/40/31, ''यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः।
   दिवं स्पृशति श्रृगेङण देवदानवसेवितः।''
4. *वही,* 1/41/23, ''द्वीपस्तस्यापरे शतयोजन विस्तृतः।
   1/41/24, अगम्यो ''मानुषैर्दीप्तस्तं मार्गध्वं समन्ततः तत्र सर्वात्मना सीता मार्गितव्या विशेषतः।''
5. *महाभारत,* 2/29/1–2
6. *वही,* 2/29/3
7. *वही,* 2/29/4–5
8. *वही,* 2/29/6–7
9. *वही,* 2/29/8
10. *वही,* 2/29/9–10
11. *वही,* 2/29/11
12. *वही,* 2/29/12

13. *महाभारत,* 2/29/13
14. *वही,* 2/29/15
15. *वही,* 2/29/16
16. *वही,* 2/30/31
17. *वही,* 2/30/12
18. *वही,* 2/30/13
19. *वही,* 2/30/4
20. *वही,* 2/30/5
21. *वही,* 2/30/6
22. *वही,* 2/30/7
23. *वही,* 2/30/8–10
24. *महाभारत,* 2/30/11–12
25. *वही,* 2/30/13–14
26. *वही,* 2/30/15–16
27. *वही,* 2/30/17
28. *वही,* 2/30/18–21
29. *वही,* 2/30/22–23
30. *वही,* 2/30/24–25
31. *महाभारत,* 2/30/26
32. *वही,* 2/30/27
33. *वही,* 2/30/28–29
34. *वही,* 2/30/30
35. *वही,* 2/31/2
36. *महाभारत,* 2/31/3
37. *वही,* 2/31/4–5
38. *वही,* 2/31/6
39. *वही,* 2/31/8
40. *वही,* 2/31/9
41. *वही,* 2/31/10–11
42. *वही,* 2/31/12–13
43. *वही,* 2/31/17
44. *वही,* 2/31/18–21
45. *वही,* 2/31/60–61
46. *वही,* 2/31/62–63–64
47. जो अपने कानो से ही शरीर को ढक ले उन्हें कर्ण प्रावरण कहते हैं।
48. *महाभारत,* 2/31/65–66
49. *वही,* 2/31/71–72
50. *वही,* 2/31/73

51. *वही,* 2/31/73
52. *महाभारत,* 2/30/28–29
53. मोतीचन्द्र, *जियोग्रॉफिकल एण्ड़ इक्नोमिक स्टडीज फ्रॉम दी उपायनपर्व,* पृ0 73–74
54. *चुल्लवग्ग,* 9/1/3
55. *महाभारत,* 2/31/74
56. मोतीचन्द्र, *पूर्वोक्त,* पृ0 73–74
57. *महाभारत,* 2/30/28–29
58. मोतीचन्द्र, *पूर्वोक्त,* पृ0 85
59. *जातक,* 6/47; 3/286
60. *वही,* 6/47; महावग्ग 8/1/36
61. *वही,* 4/352
62. *वही,* 4/401
63. *वही,* 4/401